३९: मानवीय व्यवस्था -१

दिनांक -१३/१२/२०११

विकसित चेतना क्रम में मानवत्व, देवत्व, दिव्यत्व के संयुक्त रूप में ही व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट होता है | व्यवहार में मानवत्व, विचार में देवत्व, अनुभव में दिव्यत्व का प्रमाण है | विचार के बिना व्यवहार एवं समझ के बिना विचार सिद्ध नहीं है | अर्थात अनुभव में दिव्य मानवत्व ही समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व रूप में होता है | दिव्यत्व विकसित चेतना का सम्पूर्ण प्रमाण है | विकसित चेतना तीन स्तरीय विधि से प्रमाणित होता है- १-अनुभव २- विचार ३-व्यवहार-कार्य | अभी मानव मानवत्व और देवत्व को भाषा और तर्क में ही पाना चाहता है | यह भी भ्रम है | जबकि, मानवत्व ज्ञान है | देवत्व ज्ञान है | ज्ञान, भाषा और स्मरण भर नहीं है | ज्ञान, व्यवहार में आता है | व्यवहार, दिखावा और शिष्टाचार मात्र नहीं है | व्यवहार-कार्य अपने में अपराध-मुक्त विधि से प्रकट होना, पूरकता होना ही न्याय है | जैसा स्रोत को बनाये रखते हुए, सुरक्षित रखते हुए उत्पादन करना, जिससे ऋतुकाल का संतुलन बना रहे | अभी का स्थिति में ऋतुकाल असंतुलित हो चुकी है | शोध विधि से देखने के क्रम में यह पता चलता है कि खनिज एवं वनस्पति संसार के संयुक्त रूप में ऋतुकाल का संतुलन बना रहता है | असंतुलन का मुख्य मुद्दा खनिज तेल, खनिज कोयला एवं विकिरणीय धातुओं का अपरहरण व उपयोग से निर्मित हुआ है | इसका स्पष्टीकरण यही है कि विकिरणीय धातुओं का प्रयोग धरती में तीन हजार बार सब देश मिलकर किये हैं | जिसमें से आधा भाग केवल अमेरिका ने किया है | बाकी आधा भाग शेष सब मिलकर किये हैं | अभी जो देश विकिरणीय धातुओं के प्रयोग में पीछे हैं उन्हें अविकसित देश माना जाता है | प्रौद्योगिकी विधि से जो देश पीछे हैं उन्हें भी अविकसित माना जाता है | तीसरा विधि से जो देश अपराध में लिप्त नहीं हैं उन्हें पिछड़ा माना जाता है |

इस विधि से निरपराधी मानव को कैसे पहचाना जाय यही मानव मस्तिष्क में आता है | इसके उत्तर में चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है | विकसित चेतना विधि से ही मानव चेतना प्रमाणित होना सहज है | कोई अपराधी इसको नकार नहीं पाता है, भले ही नहीं अपनावे | इस सर्वेक्षण के आधार पर मानसिकता बनता है कि प्रयोग कर देखा जा सकता है | इसका क्या प्रयोजन है? इससे यही विदित होता है कि यदि हम मानव धरती के साथ अपराध करना छोड़ देते हैं तब धरती अपने शेष ताकत से कितना संतुलित होता है, देखा जा सकता है | मानव ही अपराध करने वाला एकमात्र इकाई है | बाकी तीनों अवस्थाएं- पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था अपने पूरकता उपयोगिता, के साथ कार्यरत हैं | यह सतत चलते आ रहा है | इन्हीं के संतुलन की स्थिति में मानव का प्रकटन होना, मानव अपना प्रजनन विधिपूर्वक बहुसंख्यक होना घटित हो चुका है | अत्याधुनिक शिक्षा विधि से एक तरफ यह माना जाता है कि जन संख्या नियंत्रण होना चाहिए | दूसरी तरफ यह कहा जाता है कि अपने स्वरूप को अनेक संख्या में परिवर्तित कर लें | इन दोनों का यदि अध्ययन करें तो शिक्षा में तालमेल की व्यवस्था कहाँ है? चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से यह बात तय किये हैं | सार्वभौम व्यवस्था का धारक वाहक केवल मानव है | विकसित चेतना विधि से पारंगत मानव ही हर गांव में, हर मोहल्ला में कितने लोग रहना है यह तय करेंगे | उसके अनुसार संयत विधि से जियेंगे | समझदार मानव को संयत विधि से जीने में तकलीफ नहीं है | भ्रमित मानव में यह तकलीफ बनी हुई है | पिछड़े हुए मानव अर्थात अज्ञानी, ज्ञानी, विज्ञानी के सदृश सुविधा- संग्रह को पाने के लिये प्रवर्तनशील है | इस आंकलन से यह पता लगता

है कि अभी तक ज्ञानी, अज्ञानी, विज्ञानी जो कुछ भी सुविधा संग्रह पाये हैं अथवा व्यापारी, अधिकारी,कर्मचारी जो कुछ भी सुविधा-संग्रह उपार्जित किये हैं वह तृप्ति बिंदु का स्थली नहीं है | अभी तक सर्वाधिक सुविधायुक्त व्यक्ति का तृप्ति बिंदु नहीं है, अज्ञानियों को सुविधा संग्रह से कब तृप्ति मिलेगी यह तकाजा के रूप में आता है | तकाजा का मतलब आवश्यकता के अर्थ में है | मनुष्य का सभी आचरण, उपलब्धि सर्वमानव में, से, के लिये सम्भव होने का आवश्यकता पर सोचना बनता है | मनुष्य कुछ भी करता है, उसके मूल में विचार रहता ही है | विचार के बिना आचरण होता ही नहीं | इसे जंगल युग से लेकर अत्याधुनिक युग तक मूल्यांकन कर सकते हैं | विचार पवित्र होने पर ही आचरण में पवित्रता का प्रमाण होता है | पवित्र आचरण का स्वरूप अनुभवमूलक विधि से समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व होना पाया गया है |

अभयता का मतलब वर्तमान में विश्वास होना है | इसे समझने में, विचार में, जीने में, कार्यों में जो न्यायिकता बनती है, वह समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व ही है | इस प्रकार का आचरण करने की स्थिति में मानव परम्परा के रूप में होना सम्भावित हो जाता है | अर्थात पीढ़ी से पीढ़ी समझदार बनने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है | समझदारी के आधार पर विचार होना पाया जाता है | ऐसे समझदारीपूर्ण विचार ही नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य रूप में प्रमाणित होता है | ऐसे विचार प्रमाण के आधार पर किया गया व्यवहार कार्य के साथ स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयपूर्ण कार्य-व्यवहार प्रमाणित होता है | इसीसे मानव का मूल्यांकन होता है | यद्यपि जंगल युग में प्राकृतिक भय, जीव भय से आदमी जूझता रहा | आधुनकि काल, अत्याधुनिक काल में पहुँचने तक जीव भय से पीड़ित होना नहीं के बराबर हो गया | उसी प्रकार प्राकृतिक भय से पीड़ित होना भी कम हो गया | मानव में निहित अमानवीयता का भय से पीड़ित होना रह गया | यही तीन उन्माद के रूप में और सामरिकतन्त्र के रूप में वैध मानने का आधार बना | शिक्षा में तीन उन्मादों से अनेक अपराधों को वैध मान लिया | इस ढंग से मानव सुशील रहने की जगह कहाँ है? यही आज का ज्वलंत प्रश्न है | पीड़ा है |

प्रश्न का मतलब पीड़ा ही है | पीड़ा से मुक्ति पाने का जिज्ञासा है | जीने के रूप में सुख, शांतिपूर्वक प्रमाणित होना ही एकमात्र रास्ता है | इसी क्रम, विधि से मानव अपने उपयोगिता पूरकता को प्रमाणित कर पाता है | पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था अपने उपयोगिता, पूरकता को प्रमाणित करना बन चुका है | मानव अथवा सर्वमानव अभी अपने उपयोगिता पूरकता को प्रमाणित करने कि स्थिति में नहीं आया है | यही अपराध का मुख्य कारण बना | इन्हीं गतिविधियों से चलता हुआ मानव अनिश्चयता, अस्थिरता को स्वीकार लिया | अस्थिरता, अनिश्चयता को स्वीकारना ही सभी अपराध कृत्यों को स्वीकारने का जगह बन गयी | मानव अपने विचार में उचित ठहराये बिना अपराध कृत्य में सहमत नहीं हो पाता | इस तथ्य का परिशीलन करने से पता लगता है कि मानव परम्परा कितना प्रभावशाली विधि से अपराध किया | सर्वाधिक श्रेष्ठ मनवाया गया को देखने पर यह पता लगता है | मानव भ्रमवश ही सर्वाधिक समय से कार्य करता आ रहा है अथवा सर्वाधिक लोग भ्रमपूर्वक ही अपने श्रेष्ठता को बताना चाहा | जबकि सब अपराधभ्रमवश ही होता है | भ्रममुक्ति के लिए ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है जिसका अध्ययन, शोध, निष्कर्ष पाने का प्रयास में कुछ विद्वान लोग लगे हैं | ये सब गतिविधियों को देखने पर पता लगता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा मानव का आवश्यकता है | इस प्रकार परीक्षण, निरीक्षण से भी तय होता है कि इसी की आवश्यकता है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याणहो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत